

बुन्देलखण्ड एक ऐतिहासिक अनुशीलन

डा० दीपक पाण्डेय

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
वी०एस०एस०डी० कॉलेज कानपुर

1770 के प्रारम्भ के लगभग पेशवा माधोराव ने रघुनाथ हरि निवालकर को झांसी की सूबेदारी प्रदान की। रघुनाथहरि के पिता हरिदामौदर निवालकर पूना के दरबार में एक प्रतिष्ठित सरदार थे। वह जाति के करहाडे ब्राह्मण थे और उनका गौत्र गौतम था। झांसी में व्यवस्था स्थापित करने के लिए रघुनाथहरि निवालकर ने ओरछे पर चढ़ाई की ओर जिस प्रकार सन् 1742 ई० में नारौशंकर ने ओरछा के राजा को परास्त कर उसे झांसी के किले में कैद रखा। उसके आक्रमण के बाद ओरछा का राज्य जो उजड़ा तो आज तक न बच सका। अब रघुनाथहरि ने 7500 रू० देकर करैरा का किला भी प्राप्त कर लिया। इस प्रकार झांसी तथा निकटवर्ती क्षेत्र में पैशवाई अमल फिर से स्थापित हो गया। ओरछे पर मराठा सत्ता स्थापित होने का समाचार पाते ही टौड़ीफतेहपुर के राजा हिन्दू रघुनाथ हरि ने दिल्ली स्थित मराठा सरदार विसाजीगोविन्द से सहायता की याचना की। उसने दिल्ली से नारौशंकर के नायक अनन्दराव को रघुनाथहरि की सहायता के लिए रवाना किया। साथ ही ग्वालियर के किलेदार को भी हरि की सहायता करने के आदेश भेजे गए। इस प्रकार सम्भवतः समय पर सहायता आ पहुचने पर रघुनाथ हरि पर आया संकट शीघ्र ही टल गया।

अलीबहादुर हिम्मतबहादुर के साथ दतिया और झांसी की सीमाओं पर आ पहुँचा। रघुनाथहरि का सिंधिया से पहले से ही मन-मुटाव चला आ रहा था और अभी वह बरूआसागर चेतसिंह को दिये जाने स्वयं को वहां के किले में बन्दी बनाये जाने और अन्त में झांसी की सूबेदारी से हटा दिये जाने के सिंधिया के प्रयत्नों को भूला नहीं था। अलीबहादुर का सिंधिया से विरोध होने के कारण रघुनाथ हरि ने स्वाभाविक रूप से अलीबहादुर से सहयोग करने का निश्चय किया। इसमें सम्भवतः उसके दो लक्ष्य थे। एक तो अलीबहादुर का विरोध करने से हानि ही होती। क्योंकि अलीबहादुर उसके प्रदेशों की यों ही नहीं छोड़ देता और दूसरा यह कि अगर अलीबहादुर उसके सहयोग बुन्देलखण्ड में जम जाता तो सिंधिया के विरुद्ध उसे एक सहायक मिल जाता। साथ ही सिंधिया और अली बहादुर में परस्पर विरोध होने के कारण वे दोनों ही रघुनाथहरि पर कोई बेजा दबाव इस डर या आशंका से नहीं डालते कि कहीं वह उसके विपक्षी के साथ न हो जाए। इसलिए दतिया और ओरछा से खंडणी वसूल करने में रघुनाथहरि ने अपने भाई शिवरावहरि को 2000 सैनिकों के साथ नवाबअली बहादुर के साथ कर दिया। अलीबहादुर ने शिवरावहरि की सहायता से दतिया तथा ओरछे से 2 लाख रुपये खण्डणी के रूप में वसूल किये।⁸⁷ इस प्रकार इससे दतिया तथा ओरछा के राजा जो सदैव से उपद्रव करते आ रहे थे, दब गये। अलीबहादुर की बुन्देलखण्ड में उपस्थिति से और तुरन्त ही पश्चात् उन्होंने अर्जुनसिंह के विरुद्ध उसकी सफलता से दतिया और ओरछा के बुन्देले राजा आतंकित हो उठे जिससे रघुनाथहरि के शासनकाल के अन्तिम वर्ष तुलनात्मक रूप से शांत पूर्वक गुजरे।

बांदा में इस समय बख्तसिंह का राज्य था। बख्तसिंह 1668 में गुमानासिंह के मरने के बाद गद्दी पर बैठा था। इस समय बख्तसिंह की आयु बहुत कम थी। इसलिए उसकी ओर से राज्य कार्य उनके दीवान नौने अर्जुनसिंह देखते थे। जब खुमानसिंह और गुमानसिंह के बीच में युद्ध हुआ तब अर्जुनसिंह ने खुमानसिंह को परास्त किया था। खुमानसिंह इस युद्ध में मार गया था। जब अलीबहादुर ने हिम्मत बहादुर के साथ नौने अर्जुन सिंह पर आक्रमण किया। उस समय अर्जुनसिंह बख्तसिंह के साथ अजयगढ़ में था। अर्जुनसिंह और अलीबहादुर के बीच यह युद्ध 1792 अजय गढ़ और बनगांव के बीच हुआ। इस युद्ध में अर्जुन सिंह मारा गया और बांदा पर नवाजअली बहादुर का अधिकार हो गया। सिंधिया इस समय राजपूताने में व्यस्त था। इसलिए रघुनाथहरि उसकी ओर से भी फिलहाल निश्चिन्त था। रघुनाथ हरि के शासन काल का अब

अंत समीप था। वह 1792 के मध्य में किसी पुराने रोग से भयंकर रूप से पीड़ित हो उठा। जब उसे यह रोग ठीक होते दिखा तब उसने अपने भाई शिवरावभाऊ को झांसी का शासन सौंप दिया और स्वयं काशी चला गया। यही 1794 के अन्तिम अर्द्धांश में उसने गंगा में समाधि ले ली।

इस प्रकार रघुनाथहरि ने लगभग 25 वर्षों तक बड़ी योग्यता से झांसी पर शासन किया तथा पेशवा को प्रसन्न कर यहां का राज्य सदैव के लिए अपने वंशजों के लिए प्राप्त कर लिया। रघुनाथहरि ने झांसी उस समय प्राप्त की थी जब बुन्देलखण्ड में मराठों की स्थिति बड़ी नाजुक थी। चारों ओर विद्रोह हो रहे थे। रघुनाथहरि ने इन विद्रोहों का दमन कर व्यवस्था स्थापित की। इतना ही नहीं उसने अवध के नवाब का आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया। इसके साथ रघुनाथहरि के अंग्रेजों के सम्बन्धों का श्री गणेश भी इसी काल में होता है। सम्भवतः अंग्रेजों से सम्बन्ध उसने महादाजी सिधिया से अप्रसन्न होकर ही स्थापित किये थे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि पूजा में इस समय पेशवा की शक्ति क्षीण होती जा रही थी जबकि अंग्रेजों का सितारा बुलन्दी पर था। भारत के अधिकांश राज रजवाड़े जिनमें बुन्देला भी थे अंग्रेजों की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे थे। रघुनाथहरि न केवल एक शासक और सेनापति ही था। बल्कि वह कलाप्रिय प्रगतिशील, बुद्धिजीवी था। निवालकर वंश की कुलदेवी लक्ष्मी का मंदिर झांसी में उसी ने बनवाया था, जो आज भी मौजूद है। वह एक ज्ञानपिपासु व्यक्ति था। जो हर प्रकार के उपयोगी ज्ञान को प्राप्त करने को उद्वेगित रहता। उसका किले में अपना निजी पुस्तकालय भी था। अंग्रेजों के सम्पर्क में आने के बाद पाश्चात्य प्रगति और विशेषकर वैज्ञानिक प्रगति में उसकी रुचि बहुत बढ़ गई थी। इसका प्रमाण विलियम हण्टर का 1796 में लिखा नीचे उद्धृत विवरण है। विलियम हण्टर रघुनाथहरि की मृत्यु के 2 वर्ष पहले झांसी आया था। जैसा कि इस विवरण की अन्तिम पंक्तियों से विविध होता है। अस्तु यह विवरण एकदम समकालीन होने के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण है। 1802 ई० की बेसीन की संधि से बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी प्रभुसत्ता का प्रारम्भ हुआ। इसके साथ ही कैप्टन बेली को इस क्षेत्र पर अधिकार करने के लिये नियुक्त किया गया। बेली ने बाँदा में आकर कार्यभार ग्रहण किया। चूंकि अंग्रेजी शासन का प्रमुख उद्देश्य यहाँ का सामाजिक आर्थिक शोषण करते हुये अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त करना था। इसलिए बेली ने इस क्षेत्र के किसानों एवं जमींदारों के लिये राजस्व की दरें निर्धारित करने की दिशा में तत्परता दिखाई राजस्व के मामले में तथा इस क्षेत्र के बारे में अधिक परिचित न होने के कारण उसने मिर्जा जाफर को लखनऊ बुलाकर राजस्व प्रबन्ध के कार्य का श्री गणेश किया। बाँदा के नवाब के समय की राजस्व दरों को ध्यान में रखते हुये स्थायी व्यवस्था होने तक जल्दबाजी में भूमि कर की दरें निर्धारित की गयीं। बाँदा का लगभग सम्पूर्ण जिला अंग्रेजों को दिसम्बर 1803 ई० की पूना की संधि के द्वारा प्राप्त हुआ था। इस क्षेत्र पर 1804 ई० का रेगुलेशन नम्बर 4 लागू किया गया। जहाँ तक कालिंजर का प्रश्न था, उसका प्रबन्ध 1812 ई० तक कालिंजर के चौबे जागीरदारों के पास में था। बाद में चलकर अंग्रेजी सरकार तथा चौबे जागीरदारों के बीच क्षेत्र का आपस में आदान प्रदान किया गया। अतः चौबे जागीरदारों को भिटारी तथा बदौसा के कुछ गाँव प्राप्त हुये। इसके बदले अंग्रेजों ने कालिंजर के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। परगना खानदेह जो जालौन के मराठा सूबेदार के अधीन था। वह भी 1818 ई० में अंग्रेजों को प्राप्त हो गया। ठीक इसी तरह बाँदा के अन्य क्षेत्रों पर भी अंग्रेज अपना आधिपत्य स्थापित करने पर सफल हो गया।

1854 ई० में राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झांसी की रियासत जो अंग्रेजी शासन में मिला ली गयी थी। इसके बाद के कुछ वर्षों का समय रानी लक्ष्मी बाई और अंग्रेजों के बीच परस्पर विरोधी दावों को लेकर गुजरता रहा। किन्तु 1858 ई० में शांति व्यवस्था स्थापित होने के बाद राजस्व कर निर्धारण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। राजा गंगाधर राव की मृत्यु के समय झांसी की रियासत जिस पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया था। उसमें 9 परगने थे। झांसी, पिछौर, करेरा, मऊ, पडवाल और विजयगढ़ इसके अतिरिक्त मोठ, भाण्डेर और गरौठा भी अंग्रेजी शासन

के अंग थे। ललितपुर 1891 ई० तक एक पृथक जिला था। अतः झांसी व ललितपुर के राजस्व बन्दोबस्त अलग-अलग समय पर किये गये। 1903 ई० में झांसी और ललितपुर का राजस्व प्रबन्ध पिम ने साथ साथ किया क्योंकि उस समय ललितपुर झांसी में मिलाकर उसका एक सब डिवीजन बनादिया गया था। अंग्रेजी शासन का प्रमुख उद्देश्य बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों से अधिक से अधिक धन वसूल करना था। चूंकि यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आधारित थी। इसलिए राजस्व की दरें इस प्रकार निर्धारित की गयी ताकि अधिक से अधिक धनराशि कर के रूप में वसूल कर इंग्लैण्ड भेजी जा सके। प्रायः सभी प्रशासनिक अधिकारी सैनिक अधिकारी थे जो जन कल्याण के स्थान पर अपने उच्च अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए जनता से अधिक से अधिक कर वसूलने के लिए प्रयत्नशील थे। राजस्व निर्धारण के लिये अलग-अलग तरीके अपनाये गये। 1804 ई० में कैप्टन वेली जैसे ही बाँदा पहुँचा वैसी ही उसने ऊँची से ऊँची दरों का निर्धारण किया। अंग्रेजों में बुन्देलखण्ड में साम्राज्य विस्तार की दृष्टि भिन्न लोगों के साथ सम्मानीय स्तर देखते हुये भिन्न-भिन्न रूप में संधियाँ की।

1. बुन्देलखण्ड के राज्यों से जो धसान नदी के पश्चिमी भाग में स्थित थे। उन्हें अपनी सरकार में स्वतंत्र प्राचीन और सम्माननीय मानते हुये उनके समान भाव पर और परस्पर सुरक्षात्मक सहयोगी संधियाँ की। इन राज्यों को संधि करने वाले राज्य कहा गया। संधि राज्यों में ओरछा, दतिया और समथर के राज्य प्रमुख थे।
2. बुन्देलखण्ड के पूर्वोत्तर राज्य जिनकी गारंटी इकरारों के पालन और कम्पनी सरकार की वफादारी करने तक दी गयी इस प्रकार के राज्य को सनद राज्य की संज्ञा दी गयी। सनद राज्यों में 19 राज्य स्वीकार किये गये। पन्ना, विजावर, छतरपुर, अलीपुरा, बिजना, टोढ़ी फतेहपुर, चरखारी, दुरबई, बंका पहाड़ी, लुगासी, सरीला, जिगनी, बेरी, नेहट, गोरिहर, गरौली, नेगवां और बावनी।
3. इनकी संख्या 4 थी। इन राज्यों को अंग्रेजों ने शासन तंत्र में ले लिया था। ये राज्य थे झाँसी, जालौन, जैतपुर और खादी।
4. अधिकृत राज्य — इनकी संख्या 6 थी। इन राज्यों को इसलिए अधिकृत कर लिया क्योंकि 1857 के विद्रोह में इन राज्यों ने विरोध किया था। यह राज्य थे चिरगाँव, कुरवा, तिरोहा, राधौगढ़, साहगढ़ और बानपुर।

शिवराव भाऊ एक साहसी व्यक्ति थे। वे अपना शासन अच्छे ढंग से चला रहे थे। तभी 1802 में अंग्रेजों और पेशवा बाजीराव के बीच बेसिन की संधि हुई। बेसिन की संधि के तहत 3616000 रु० लगान और बुन्देलखण्ड का क्षेत्र पेशवा ने अंग्रेजों को दे दिया। इस समस्या को सामने देखकर शिवराव भाऊ ने 6 फरवरी सन् 1804 को अंग्रेजों से रक्षात्मक संधि की। परस्पर मैत्री के कारण अंग्रेजों की सर्वश्रेष्ठता स्वीकार करने में भाऊ ने अमूल्य सहयोग दिया। उन्होंने बुन्देलखण्ड की आन, बान और शान के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी। शिवराव भाऊ के पश्चात रामचन्द्र उत्तराधिकारी बना। 17 नवम्बर 1817 को अंग्रेजों व राव के बीच दूसरी संधि हुई। संधि में यह शर्त थी झांसी का राज्य रामचन्द्र राव के कुटुम्ब को दवाम के लिये रहेगा। चाहे वारिश और सन्तान गोद लिये हुये हों। रामचन्द्र राव 1835 ई० में निःसंतान मरा। उसकी रानी ने कृष्ण राव को गोद लिया। मगर अंग्रेजों ने उसे राजा स्वीकार नहीं किया। सन् 1835 में रघुनाथ राव राजा बने। 1838 में इनकी भी मृत्यु हो गयी। सन् 1838 में गंगाधर राव का झांसी में राज्याभिषेक हुआ। अंग्रेजों ने यह शर्त रखी कि झांसी दरबार को अपने खर्च पर कुछ अंग्रेजी फौज रखनी पड़ेगी। 27 दिसम्बर 1892 ई० को अंग्रेजों और गंगाधर राव के बीच दूसरी संधि हुई। इस संधि के अनुसार मोठ, गरौठा तहसीलों का लगभग पूरा भाग अंग्रेजों को मिल गया जिससे 1843 में जालौन के कमिश्नर के अधीन कर दिया गया। बदले में राजा गंगाधर राव को झांसी के प्रशासनिक अधिकार भी सौंप दिये गये। जो भी राज्य अपनी स्वतंत्रता कायम करने के लिये कम्पनी सरकार से टकराता उसका नष्ट होना निश्चित था। इस कूटनीतिक तथ्य को दबंग महाराजा गंगाधरराव स्वीकारने को विवश थे।



सन्दर्भ ग्रन्थ

- विश्वनाथ काशीनाथ रजवाडे मराठ्यांचा इतिहासांची साघने, भाग-6
- साहू मराठी रियासत भाग-5, पृ0सं0 85, 865
- विश्वनाथ काशीनाथ रजवाडे मराठ्यांचा इतिहासांची साघने, भाग-1 नं0 208
- गोविन्द सखाराम सरदेसाई झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, भाग-2,
- सरदेसाई सिलेक्शसन्स फ्राम दि पेशवा दपतर, 22 नं0 241